

भक्ति खण्ड

देवभक्ति

(१)

एक तुम्हीं आधार हो जग में, अय मेरे भगवान ।

कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥

सँभल न पाया गोते खाया, तुम बिन हो हैरान ।

कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥टेक ॥

आया समय बड़ा सुखकारी, आतम-बोध कला विस्तारी ।

मैं चेतन, तन वस्तु न्यारी, स्वयं चराचर झलकी सारी ॥

निज अन्तर में ज्योति ज्ञान की अक्षयनिधि महान ॥

कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥१॥

दुनिया में इक शरण जिनंदा, पाप-पुण्य का बुरा ये फंदा ।

मैं शिवभूप रूप सुखकंदा, ज्ञाता-दृष्टा तुम-सा बंदा ॥

मुझ कारज के कारण तुम हो, और नहीं मतिमान ॥

कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥२॥

सहज स्वभाव भाव दरशाऊँ, पर परिणति से चित्त हटाऊँ ।

पुनि-पुनि जग में जन्म न पाऊँ, सिद्ध समान स्वयं बन जाऊँ ॥

चिदानन्द चैतन्य प्रभु का है 'सौभाग्य' प्रधान ॥

कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥३॥

(२)

तिहारे ध्यान की मूर्त, अजब छवि को दिखाती है ।

विषय की वासना तज कर, निजातम लौ लगाती है ॥टेक ॥

तेरे दर्शन से हे स्वामी! लखा है रूप मैं मेरा ।

तजूँ कब राग तन-धन का, ये सब मेरे विजाती हैं ॥१॥

जगत के देव सब देखे, कोई रागी कोई द्वेषी ।
 किसी के हाथ आयुध है, किसी को नार भाती है ॥२॥
 जगत के देव हठग्राही, कुनय के पक्षपाती हैं ।
 तू ही सुनय का है वेत्ता, वचन तेरे अघाती हैं ॥३॥
 मुझे कुछ चाह नहीं जग की, यही है चाह स्वामी जी ।
 जपूँ तुम नाम की माला, जो मेरे काम आती है ॥४॥
 तुम्हारी छवि निरख स्वामी, निजातम लौ लगी मेरे ।
 यही लौ पार कर देगी, जो भक्तों को सुहाती है ॥५॥

(३)

मेरे मन-मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान् । टेक ॥
 भगवन तुम आनन्द सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर ।
 निशि-दिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान् ॥१॥
 सुर किन्नर गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते ।
 गाते सब तेरा यशगान, पधारो महावीर भगवान् ॥२॥
 जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया ।
 तुम हो दयानिधि भगवान्, पधारो महावीर भगवान् ॥३॥
 भगत जनों के कष्ट निवारें, आप तरें हमको भी तारें ।
 कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान् ॥४॥
 आये हैं हम शरण तिहारी, भक्ति हो स्वीकार हमारी ।
 तुम हो करुणा दयानिधान, पधारो महावीर भगवान् ॥५॥
 रोम-रोम पर तेज तुम्हारा, भू-मण्डल तुमसे उजियारा ।
 रवि-शशि तुम से ज्योतिर्मान, पधारो महावीर भगवान् ॥६॥

(४)

निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार । टेक ॥
 चरण-कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार ।
 पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्मतत्त्व ही सार ॥
 यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥१॥